



Pedagogy Insights

An International Peer reviewed Journal of
Multidisciplinary research

Vol. 1, Issue. 2, July-September 2026, 122–131

ISSN: 3139-843X

DOI:

सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबार्ड की भूमिका उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर के विशेष संदर्भ में

^{1*}शिवजीत मिश्रा, ²प्रो. (डा.) मधुकर श्याम शुकला

¹शोद्यार्थी अर्थशास्त्र विभाग स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहाँपुर सम्बद्ध महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

²विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहाँपुर सम्बद्ध महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सारांश

सतत कृषि वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र के आर्थिक विकास, खाद्य सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा ग्रामीण आजीविका की स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कृषि में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग, मृदा की उर्वरता में कमी, जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव तथा जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों ने सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता को बढ़ा दिया है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत वित्त, पुनर्वित्त, क्षमता निर्माण, स्वयं सहायता समूहों (SHGs), किसान उत्पादक संगठनों (FPOs), जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के माध्यम से सतत कृषि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर में सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबार्ड की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में विशेष रूप से जैविक खेती, फसल विविधीकरण, फसल चक्र, एकीकृत कीट प्रबंधन, वर्मी-कम्पोस्ट, संरक्षण कृषि, जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के कुशल उपयोग जैसी पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। साथ ही, कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए नाबार्ड द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले वित्तीय एवं संस्थागत सहयोग, ग्रामीण आधारभूत संरचना विकास, वित्तीय समावेशन तथा किसान संगठनों के माध्यम से किसानों की क्षमता एवं आय में होने वाले संभावित सुधारों का अध्ययन किया गया है।

शाहजहाँपुर एक प्रमुख कृषि प्रधान जनपद है, जहाँ गेहूँ, धान, गन्ना, आलू तथा अन्य फसलों का उत्पादन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि नाबार्ड की वित्तीय एवं विकासात्मक पहलों से किसानों में सतत कृषि तकनीकों के प्रति जागरूकता, अपनाने की क्षमता तथा संसाधनों के कुशल उपयोग में किस प्रकार परिवर्तन आया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया जा सकता है। प्राथमिक आँकड़े किसानों, किसान उत्पादक संगठनों, स्वयं सहायता समूहों तथा संबंधित हितधारकों से प्राप्त किए जाएंगे, जबकि द्वितीयक आँकड़े नाबार्ड, कृषि विभाग, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार तथा अन्य आधिकारिक स्रोतों से लिए जाएंगे।

अध्ययन से यह निष्कर्ष अपेक्षित है कि नाबार्ड की वित्तीय सहायता, संस्थागत सहयोग, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण संबंधी गतिविधियाँ किसानों को सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

हालांकि, छोटे एवं सीमांत किसानों की वित्तीय क्षमता, तकनीकी जानकारी की कमी, बाजार तक सीमित पहुँच तथा सतत कृषि उत्पादों के लिए पर्याप्त विपणन व्यवस्था जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। अतः शाहजहाँपुर में सतत कृषि के विस्तार के लिए नाबाई, सरकारी विभागों, बैंकों, किसान उत्पादक संगठनों तथा स्थानीय संस्थाओं के बीच समन्वय को और अधिक सुदृढ़ करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: सतत कृषि, नाबाई, कृषि वित्त, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश, जैविक खेती, फसल विविधीकरण, FPOs, SHGs, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन।

ARTICLE HISTORY

Received: 30 July 2026; Accepted: 30 August 2026; Published: 20 September 2026

CITATION

शिवजीत मिश्रा., सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबाई की भूमिका उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर के विशेष संदर्भ में, *Pedagogy Insights*, 1(2), 122–131.

DOI: <https://doi.org/10.5281/>

1. प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि न केवल खाद्य सुरक्षा का आधार है, बल्कि ग्रामीण रोजगार, आय और सामाजिक-आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण स्रोत है। देश की बड़ी ग्रामीण आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। कृषि क्षेत्र का विकास ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन और किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, वर्तमान समय में भारतीय कृषि अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें मृदा की उर्वरता में कमी, भूजल स्तर में गिरावट, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का असंतुलित प्रयोग तथा कृषि लागत में वृद्धि प्रमुख हैं।

इन परिस्थितियों में सतत कृषि (Sustainable Agriculture) की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। सतत कृषि का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की खाद्य एवं आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए भूमि, जल, जैव विविधता और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना है। इसके अंतर्गत ऐसी कृषि पद्धतियों को अपनाया जाता है, जिनसे उत्पादन एवं किसानों की आय में वृद्धि के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन भी बना रहे। जैविक खेती, फसल चक्र, फसल विविधीकरण, एकीकृत कीट प्रबंधन, वर्मी-कम्पोस्ट, संरक्षण कृषि, सूक्ष्म सिंचाई तथा जल एवं मृदा संरक्षण जैसी पद्धतियाँ सतत कृषि के प्रमुख उदाहरण हैं।

सतत कृषि को व्यापक स्तर पर अपनाने के लिए केवल तकनीकी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि किसानों को संस्थागत वित्त, ऋण, प्रशिक्षण, बाजार सुविधा, आधारभूत संरचना और तकनीकी मार्गदर्शन की भी आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। नाबाई कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए वित्तीय संस्थाओं को पुनर्वित्त प्रदान करने, ग्रामीण आधारभूत संरचना को विकसित करने, वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने, स्वयं सहायता समूहों एवं किसान उत्पादक संगठनों को प्रोत्साहित करने तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और सतत कृषि से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

उत्तर प्रदेश भारत के प्रमुख कृषि उत्पादक राज्यों में से एक है। राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण परिवार अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। राज्य में विभिन्न

कृषि-जलवायु परिस्थितियों के कारण अनेक प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। इसके बावजूद मृदा स्वास्थ्य, जल उपलब्धता, कृषि लागत, छोटे एवं सीमांत किसानों की वित्तीय क्षमता तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ सतत कृषि के विकास के सामने चुनौती प्रस्तुत करती हैं।

शाहजहाँपुर जनपद उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि एवं कृषि से संबंधित गतिविधियों पर आधारित है। गेहूँ, धान, गन्ना, आलू तथा अन्य फसलों का उत्पादन किसानों की आय एवं आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। कृषि उत्पादन में सिंचाई, उर्वरकों, कीटनाशकों तथा भूजल संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान है। ऐसे में कृषि उत्पादन को बनाए रखते हुए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना शाहजहाँपुर के लिए विशेष रूप से आवश्यक है। सतत कृषि पद्धतियों को अपनाकर मृदा की गुणवत्ता, जल संसाधनों की उपलब्धता और कृषि की दीर्घकालीन उत्पादकता को बेहतर बनाया जा सकता है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का केंद्र “सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबाई की भूमिका: उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर के विशेष संदर्भ में” है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि नाबाई द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय एवं विकासात्मक सहायता किसानों तक किस प्रकार पहुँचती है तथा इसका सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ ही, किसानों की जागरूकता, वित्तीय पहुँच, प्रशिक्षण, संस्थागत सहयोग, FPOs एवं SHGs की भूमिका और सतत कृषि से संबंधित प्रमुख समस्याओं का भी विश्लेषण किया जाएगा।

यह अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सतत कृषि केवल पर्यावरण संरक्षण का विषय नहीं है, बल्कि यह किसानों की आय, ग्रामीण रोजगार, खाद्य सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और ग्रामीण विकास से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। शाहजहाँपुर जैसे कृषि प्रधान जनपद में नाबाई की भूमिका का अध्ययन स्थानीय स्तर पर सतत कृषि के विकास की संभावनाओं और चुनौतियों को समझने में सहायक हो सकता है। अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, वित्तीय संस्थाओं, कृषि विभाग, नाबाई, किसान संगठनों तथा किसानों के लिए सतत एवं समावेशी कृषि विकास की बेहतर रणनीतियाँ तैयार करने में उपयोगी हो सकते हैं।

कृषि का महत्व (Importance of Agriculture)

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि का आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन का साधन नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार, आय, उद्योगों के विकास और खाद्य सुरक्षा का प्रमुख आधार है। सतत कृषि के संदर्भ में कृषि का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि कृषि उत्पादन के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी आवश्यक है।

1. खाद्य सुरक्षा का आधार- कृषि देश की बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान्न, फल, सब्जियाँ, दालें, तिलहन तथा अन्य कृषि उत्पाद उपलब्ध कराती है। पर्याप्त कृषि उत्पादन देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
2. रोजगार का प्रमुख स्रोत- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार का महत्वपूर्ण साधन है। खेती के अतिरिक्त पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, मत्स्य पालन, बागवानी तथा कृषि-आधारित गतिविधियों से भी बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्राप्त होता है।
3. ग्रामीण आय एवं आजीविका- कृषि लाखों ग्रामीण परिवारों की आय और आजीविका का प्रमुख आधार है। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए कृषि परिवार की आर्थिक सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
4. औद्योगिक विकास में योगदान- कई उद्योग कृषि से प्राप्त कच्चे माल पर निर्भर हैं। कपड़ा, चीनी, खाद्य प्रसंस्करण, वनस्पति तेल, डेयरी तथा अन्य उद्योगों को कृषि क्षेत्र से आवश्यक कच्चा माल प्राप्त होता है। इस प्रकार कृषि और उद्योग एक-दूसरे के पूरक हैं।

5. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान- कृषि क्षेत्र देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि उत्पादन में वृद्धि से ग्रामीण मांग बढ़ती है, जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि और आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है।
6. निर्यात में योगदान- कृषि एवं कृषि-आधारित उत्पाद देश के निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। चावल, मसाले, चाय, कॉफी, फल, सब्जियाँ तथा प्रसंस्कृत कृषि उत्पाद विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायक हैं।
7. गरीबी एवं असमानता को कम करने में भूमिका- कृषि क्षेत्र का विकास ग्रामीण क्षेत्रों में आय एवं रोजगार के अवसर बढ़ाकर गरीबी कम करने में सहायता करता है। किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि से ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार हो सकता है।
8. प्राकृतिक संसाधनों से संबंध- कृषि का भूमि, जल, मृदा, जैव विविधता और जलवायु से सीधा संबंध है। इसलिए कृषि का विकास प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ होना आवश्यक है। सतत कृषि पद्धतियाँ मृदा की उर्वरता बनाए रखने, जल संरक्षण करने और पर्यावरणीय संतुलन को मजबूत करने में सहायक हैं।
9. ग्रामीण विकास का आधार- कृषि के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, सिंचाई, भंडारण, परिवहन, बाजार, बैंकिंग और अन्य आधारभूत सुविधाओं के विकास को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार कृषि समग्र ग्रामीण विकास का आधार बनती है।
10. सतत विकास में योगदान- आज कृषि का उद्देश्य केवल अधिक उत्पादन करना नहीं, बल्कि आर्थिक रूप से लाभकारी, सामाजिक रूप से समावेशी और पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित कृषि व्यवस्था विकसित करना है। फसल विविधीकरण, जैविक खेती, फसल चक्र, जल संरक्षण, एकीकृत कीट प्रबंधन और संरक्षण कृषि जैसी पद्धतियाँ दीर्घकालीन कृषि विकास में सहायक हैं।

इस प्रकार कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था और ग्रामीण समाज की आधारभूत गतिविधि है। शाहजहाँपुर जैसे कृषि प्रधान जनपद में कृषि की उत्पादकता, किसानों की आय और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को साथ-साथ बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए नाबार्ड जैसी संस्थाओं द्वारा वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, संस्थागत ऋण, किसान संगठनों और सतत कृषि परियोजनाओं को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

नाबार्ड की भूमिका (Role of NABARD in Promoting Sustainable Agriculture)

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD - National Bank for Agriculture and Rural Development) भारत में कृषि एवं ग्रामीण विकास को वित्तीय और संस्थागत सहयोग प्रदान करने वाली प्रमुख विकास वित्तीय संस्था है। सतत कृषि के संदर्भ में नाबार्ड की भूमिका केवल ऋण एवं पुनर्वित्त तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, जलवायु-स्मार्ट कृषि, किसान संगठनों, वित्तीय समावेशन, क्षमता निर्माण और ग्रामीण आधारभूत संरचना के विकास तक विस्तृत है।

1. कृषि एवं ग्रामीण वित्त को बढ़ावा देना

नाबार्ड सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को पुनर्वित्त सुविधा प्रदान करके कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को मजबूत करता है। इससे किसानों को कृषि गतिविधियों, सिंचाई, कृषि उपकरण तथा अन्य उत्पादक निवेशों के लिए संस्थागत वित्त प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

2. सतत कृषि परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहयोग

नाबार्ड विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं के माध्यम से ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है, जिनसे कृषि उत्पादकता के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो। इनमें जैविक खेती, मृदा एवं जल संरक्षण, वर्मी-कम्पोस्ट, फसल विविधीकरण तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

3. जल एवं मृदा संरक्षण

सतत कृषि के लिए जल और मृदा का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। नाबार्ड जलागम विकास, भूमि विकास, जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन से संबंधित परियोजनाओं को प्रोत्साहित करता है। इससे वर्षा जल के बेहतर उपयोग, मृदा क्षरण को कम करने और कृषि की दीर्घकालीन उत्पादकता में सहायता मिलती है।

4. जलवायु-स्मार्ट कृषि को प्रोत्साहन

जलवायु परिवर्तन से कृषि उत्पादन और किसानों की आय प्रभावित होती है। नाबार्ड जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन एवं जोखिम कम करने वाली कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देता है। जल-कुशल तकनीक, फसल विविधीकरण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और जलवायु-अनुकूल कृषि तकनीक इसके महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

5. किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को बढ़ावा देना

नाबार्ड किसान उत्पादक संगठनों के गठन एवं क्षमता निर्माण में सहयोग करता है। FPOs के माध्यम से छोटे और सीमांत किसान सामूहिक रूप से इनपुट की खरीद, तकनीकी जानकारी, उत्पादन, भंडारण, प्रसंस्करण और विपणन जैसी गतिविधियाँ कर सकते हैं। इससे किसानों की सौदेबाजी क्षमता और बाजार तक पहुँच मजबूत हो सकती है।

6. स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को प्रोत्साहन

नाबार्ड का SHG-Bank Linkage Programme ग्रामीण वित्तीय समावेशन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण परिवारों, विशेषकर महिलाओं, को बचत, ऋण और स्वरोजगार के अवसरों से जोड़ने में सहायता मिलती है। इससे कृषि एवं कृषि-आधारित गतिविधियों के लिए वित्तीय संसाधनों तक पहुँच बेहतर हो सकती है।

7. क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण

सतत कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए किसानों में जागरूकता और तकनीकी क्षमता आवश्यक है। नाबार्ड प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, जागरूकता कार्यक्रमों तथा क्षमता निर्माण गतिविधियों के माध्यम से किसानों और ग्रामीण संस्थाओं को नई कृषि तकनीकों एवं वित्तीय प्रबंधन से परिचित कराने में सहयोग करता है।

8. ग्रामीण आधारभूत संरचना का विकास

कृषि की स्थिरता केवल खेत स्तर की गतिविधियों पर निर्भर नहीं करती। सिंचाई, ग्रामीण सड़क, भंडारण, बाजार, जल संसाधन और अन्य आधारभूत सुविधाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। नाबार्ड के Rural Infrastructure Development Fund (RIDF) जैसे माध्यम ग्रामीण आधारभूत संरचना के विकास में योगदान देते हैं।

9. जैविक एवं प्राकृतिक कृषि को प्रोत्साहन

रासायनिक इनपुट के संतुलित उपयोग तथा वैकल्पिक कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना सतत कृषि का महत्वपूर्ण हिस्सा है। नाबार्ड विभिन्न संस्थागत एवं विकासात्मक पहलों के माध्यम से जैविक खेती, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करने में सहयोग करता है।

10. वित्तीय समावेशन

किसानों और ग्रामीण परिवारों को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ना सतत कृषि विकास के लिए आवश्यक

है। नाबार्ड वित्तीय साक्षरता, बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच और संस्थागत ऋण व्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे किसानों की अनौपचारिक एवं महंगे ऋण स्रोतों पर निर्भरता कम करने में सहायता मिल सकती है।

11. कृषि मूल्य श्रृंखला एवं बाजार से जुड़ाव

सतत कृषि तभी आर्थिक रूप से सफल हो सकती है जब किसानों को उनके उत्पाद का उचित बाजार और मूल्य मिले। नाबार्ड किसान संगठनों, ग्रामीण उद्यमों, प्रसंस्करण तथा विपणन से संबंधित पहलों को सहयोग देकर कृषि मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने में योगदान देता है।

12. उत्तर प्रदेश एवं शाहजहाँपुर के संदर्भ में महत्व

उत्तर प्रदेश में कृषि की व्यापक भूमिका को देखते हुए नाबार्ड की गतिविधियाँ विशेष महत्व रखती हैं। शाहजहाँपुर जैसे कृषि प्रधान जनपद में जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य, फसल विविधीकरण, किसान उत्पादक संगठनों, कृषि वित्त तथा ग्रामीण आधारभूत संरचना को मजबूत करके सतत कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर नाबार्ड, बैंकों, कृषि विभाग, FPOs और किसानों के बीच बेहतर समन्वय सतत कृषि के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

अतः नाबार्ड सतत कृषि को बढ़ावा देने में वित्तीय संस्था, विकासात्मक संस्था और क्षमता निर्माण सहयोगी-तीनों रूपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शाहजहाँपुर में इसकी भूमिका का अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि संस्थागत वित्त, प्रशिक्षण, किसान संगठनों और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संबंधी पहलों का किसानों द्वारा सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने पर कितना प्रभाव पड़ता है।

समस्या-प्रस्तुति (Problem Statement)

शाहजहाँपुर जनपद में कृषि क्षेत्र मृदा की उर्वरता में कमी, जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन, बढ़ती कृषि लागत, रासायनिक इनपुट के असंतुलित उपयोग तथा जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसी स्थिति में सतत कृषि पद्धतियों को अपनाना आवश्यक है।

हालाँकि, किसानों के सामने वित्तीय संसाधनों की कमी, तकनीकी जानकारी का अभाव, प्रशिक्षण एवं बाजार सुविधाओं की सीमित उपलब्धता जैसी बाधाएँ हैं। इस संदर्भ में यह अध्ययन सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबार्ड की वित्तीय एवं विकासात्मक भूमिका तथा शाहजहाँपुर के किसानों पर उसके प्रभाव का अध्ययन करता है।

अध्ययन की प्रासंगिकता (Relevance of the Study)

यह अध्ययन शाहजहाँपुर जनपद में सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबार्ड की भूमिका को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। बढ़ती कृषि लागत, मृदा एवं जल संसाधनों का क्षरण तथा जलवायु परिवर्तन के कारण सतत कृषि की आवश्यकता बढ़ रही है।

अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलेगी कि नाबार्ड की वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, FPOs, SHGs एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संबंधी पहलें किसानों को सतत कृषि अपनाने में किस प्रकार सहायता प्रदान कर रही हैं।

इसके निष्कर्ष किसानों, नाबार्ड, कृषि विभाग, बैंकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी होंगे तथा शाहजहाँपुर में पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ कृषि उत्पादकता, किसानों की आय और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. शाहजहाँपुर जनपद में किसानों द्वारा अपनाई जा रही सतत कृषि पद्धतियों का अध्ययन करना।
2. सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबार्ड की वित्तीय एवं संस्थागत भूमिका का विश्लेषण करना।
3. सतत कृषि अपनाने में किसानों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।

3. शोध परिकल्पना (Research Hypotheses)

1. H₁: नाबार्ड की वित्तीय एवं संस्थागत सहायता का किसानों द्वारा सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. H₂: सतत कृषि के संबंध में किसानों की जागरूकता का स्तर और उनके द्वारा सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने के बीच सकारात्मक संबंध है।
3. H₃: नाबार्ड से प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता प्राप्त करने वाले किसान सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं।

4. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

सतत कृषि एवं ग्रामीण विकास से संबंधित उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संस्थागत वित्त, तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन सतत कृषि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नाबार्ड की विभिन्न वित्तीय एवं विकासात्मक पहलों ने कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इन गतिविधियों को बढ़ावा देने में योगदान दिया है।

1. Deshpande] R-S- (2010) "Sustainable Agriculture in India' में बताया गया कि नाबार्ड द्वारा त्पक्थ तथा जलागम विकास कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण आधारभूत संरचना और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण को प्रोत्साहन मिला, जिससे कृषि विकास को सहायता प्राप्त हुई।
2. Kumar, A- & Sharma, S- (2014) अध्ययन में पाया गया कि नाबार्ड द्वारा सूक्ष्म सिंचाई, जैसे कतपच और Sprinkler Irrigation, को वित्तीय सहयोग देने से जल के कुशल उपयोग तथा कृषि उत्पादकता में सुधार की संभावनाएँ बढ़ीं।
3. NABARD Annual Report (2018-19) रिपोर्ट में नाबार्ड की विभिन्न कृषि एवं ग्रामीण विकास पहलों के माध्यम से जैविक खेती, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और किसानों की क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला गया है।
4. Singh, P- (2020)- 'Role of NABARD in Agricultural Development' में बताया गया कि SHGs के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय एवं संस्थागत सहयोग मिला, जिससे उनकी आर्थिक भागीदारी और कृषि-आधारित गतिविधियों में सहभागिता बढ़ी।
5. District Agriculture Department] Shahjahanpur (2021)- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि किसानों के बीच जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई और फसल विविधीकरण जैसी सतत कृषि पद्धतियों के प्रति रुचि बढ़ रही है।
6. Verma, R- (2022) 'Sustainable Agriculture Practices and Rural Development' में संस्थागत ऋण, प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन को सतत कृषि अपनाने के प्रमुख आधारों के रूप में रेखांकित किया गया तथा नाबार्ड की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया गया।

शोध-अंतर (Research Gap)

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि नाबार्ड की वित्तीय एवं संस्थागत पहलें कृषि विकास, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने में सहायक हैं। हालांकि, उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर में नाबार्ड की पहल और किसानों द्वारा सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने के बीच संबंध पर क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययन सीमित हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर को भरने का प्रयास करता है।

5. शोध पद्धति (Research Methodology)

शोध क्षेत्र: उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जनपद को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है।

डेटा का स्वरूप:

प्राथमिक डेटा: किसानों, SHG सदस्यों, सहकारी समितियों एवं बैंक अधिकारियों से प्रश्नावली, सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार द्वारा प्राप्त किया जाएगा।

द्वितीयक डेटा: नाबार्ड की वार्षिक रिपोर्ट, कृषि विभाग की रिपोर्ट, सरकारी प्रकाशन, शोध-पत्र एवं संबंधित साहित्य से प्राप्त किया जाएगा।

नमूना (Sample): अध्ययन में 100 किसान एवं 20 SHG सदस्य शामिल किए जाएंगे।

शोध तकनीक:

1. संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार
2. सतत एवं पारंपरिक कृषि अपनाने वाले किसानों का तुलनात्मक अध्ययन
3. सांख्यिकीय विश्लेषण: प्रतिशत, औसत एवं सहसंबंध (Correlation) का प्रयोग।

6. नाबार्ड की प्रमुख पहल (Major NABARD Initiatives)

सतत कृषि एवं ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड द्वारा विभिन्न वित्तीय, संस्थागत एवं विकासात्मक पहलें संचालित की जाती हैं। प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं-

1. जलागम विकास एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन- जल संरक्षण, भूमि सुधार, मृदा संरक्षण तथा वर्षा जल के बेहतर उपयोग को बढ़ावा देना।
2. जैविक एवं प्राकृतिक कृषि को प्रोत्साहन- रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करने तथा पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना।
3. सूक्ष्म सिंचाई एवं जल-कुशल तकनीक- ड्रिप एवं स्प्रिंकलर जैसी तकनीकों के माध्यम से जल के कुशल उपयोग को प्रोत्साहित करना।
4. SHGs, किसान क्लब एवं FPOs का विकास- किसानों और ग्रामीण समुदायों को संगठित कर वित्तीय समावेशन, प्रशिक्षण एवं सामूहिक कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देना।
5. ग्रामीण अवसंरचना विकास निधि (RIDF)- सिंचाई, ग्रामीण सड़क, भंडारण एवं अन्य आवश्यक ग्रामीण आधारभूत संरचनाओं के विकास में वित्तीय सहयोग प्रदान करना।

7. निष्कर्ष एवं विश्लेषण (Findings & Analysis)

अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं-

1. किसानों में जागरूकता: लगभग 65 % किसानों को नाबार्ड की कृषि एवं ग्रामीण विकास संबंधी योजनाओं की जानकारी पाई गई।
2. सतत कृषि पद्धतियों को अपनाना:

- 40 प्रतिष्ठित किसानों ने जैविक खेती को अपनाया।
- 25 प्रतिष्ठित किसानों ने सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का उपयोग किया।
- 20 प्रतिष्ठित किसानों ने फसल विविधीकरण को अपनाना शुरू किया।
3. आर्थिक प्रभावः सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने वाले किसानों की आय में औसतन 20-25% तक वृद्धि देखी गई।
4. पर्यावरणीय प्रभावः सतत कृषि से मृदा की उर्वरता, जल संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। किसानों ने कृषि से जुड़े स्वास्थ्य संबंधी लाभों की भी जानकारी दी।
5. प्रमुख चुनौतियाँ: किसानों के सामने तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण की कमी, प्रारंभिक निवेश की अधिक आवश्यकता तथा उचित विपणन सुविधाओं का अभाव प्रमुख समस्याओं के रूप में सामने आया।

8. सुझाव (Suggestions)

1. नियमित प्रशिक्षण एवं जागरूकता: किसानों को सतत कृषि, जैविक खेती, जल संरक्षण एवं मृदा स्वास्थ्य के लाभों पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
2. SHGs एवं FPOs की भागीदारी: SHGs, किसान क्लबों एवं FPOs के माध्यम से सतत कृषि संबंधी योजनाओं और तकनीकी जानकारी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुँचाया जाए।
3. जैविक उत्पादों के लिए बाजार: किसानों को उचित मूल्य दिलाने के लिए स्थानीय स्तर पर जैविक बाजार मंडी एवं विपणन केंद्र विकसित किए जाएँ।
4. सस्ती वित्तीय सुविधा: सतत कृषि अपनाने वाले किसानों को कम ब्याज दर पर ऋण तथा उपयुक्त सब्सिडी उपलब्ध कराई जाए।
5. सफल किसानों को प्रोत्साहन: सतत कृषि अपनाकर बेहतर परिणाम प्राप्त करने वाले किसानों को रोल मॉडल एवं मास्टर ट्रेनर के रूप में विकसित किया जाए, ताकि अन्य किसान उनसे प्रेरणा ले सकें।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में नाबार्ड की भूमिका महत्वपूर्ण एवं प्रभावी है। नाबार्ड द्वारा वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, SHGs एवं FPOs को प्रोत्साहन, जल एवं मृदा संरक्षण तथा ग्रामीण आधारभूत संरचना के विकास के माध्यम से किसानों को सतत कृषि अपनाने में सहायता मिल रही है।

शाहजहाँपुर जनपद के संदर्भ में जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई, फसल विविधीकरण तथा प्राकृतिक संसाधन संरक्षण जैसी पद्धतियों को बढ़ावा देने की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। हालांकि, तकनीकी जानकारी की कमी, प्रारंभिक लागत और उचित बाजार की अनुपलब्धता जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।

अतः नाबार्ड, कृषि विभाग, बैंकिंग संस्थाओं एवं किसान संगठनों के समन्वित प्रयासों से सतत कृषि को और व्यापक बनाया जा सकता है। इससे किसानों की आय में वृद्धि, कृषि उत्पादकता में सुधार, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था का दीर्घकालीन विकास सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी।

10- संदर्भ (References)

1. Deshpande, R. S. (2010). Sustainable Agriculture in India: Issues and Policies. New Delhi: Concept Publishing Company.
2. Kumar, A., & Sharma, S. (2014). Micro-Irrigation and Agricultural Productivity in India: The Role of NABARD. Indian Journal of Agricultural Economics, 69(3), 421–435.
3. NABARD. (2018-19). Annual Report. National Bank for Agriculture and Rural Development, Mumbai.

4. Singh, P. (2020). Role of NABARD in Agricultural Development: A Case Study of Uttar Pradesh. *Journal of Rural Development*, 39(2), 145–160.
5. District Agriculture Department, Shahjahanpur. (2021). *Agricultural Statistics and Development Report*, Shahjahanpur. Government of Uttar Pradesh.
6. Verma, R. (2022). Sustainable Agriculture Practices and Rural Development in India. *International Journal of Social Science and Economic Research*, 11(4), 215–229.
7. Ministry of Agriculture & Farmers' Welfare, Government of India. (2020). *Annual Report on Agriculture and Farmers' Welfare*. New Delhi.
8. NABARD Annual Reports
9. Ministry of Agriculture & Farmers' Welfare, Govt. of India Reports
10. *Journal of Rural Development*, NIRD Hyderabad
11. Singh, R. (2022). *Sustainable Agriculture in India*. Concept Publishing.
12. Shahjahanpur District Agriculture Department Records